जाति उत्पीड़न अपराधों को मैनेज किया जाता है, सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल से जुड़े मामले में भाजपा खुलकर अपराधी के साथ है

भंवर मेघवंशी की रिपोर्ट

भांडे ही में भेद है! राजस्थान के जालोर जिले के सायला ब्लॉक के सुराणा गाँव की सरस्वती विद्या मंदिर स्कूल की तीसरी कक्षा का नौ वर्षीय दलित छात्र इंद्र कुमार मेघवाल भारत के घिनौने जातिवाद की भेंट चढ़ गया, शिक्षक द्वारा की गई पिटाई से घायल हुए इस मासूम की इलाज के दौरान मौत हो गई।

मृतक छात्र इंद्र कुमार का उसके गाँव में अंतिम संस्कार किया जा चुका है। अंतिम विधि से पूर्व वहाँ पहुँचे इंसाफ़ माँग रहे लोगों पर राज्य के दमन की लाठियाँ भी चली, शायद इंद्र कुमार का खून कम था, इसलिए और भी दलितों का खून बहाया गया। यहाँ तक कि मृत छात्र के शोक संतप्त परिजनों को भी पुलिस की लाठियों का शिकार होना पड़ा, हमारा सिस्टम कितना असंवेदनशील है, इससे यह पता चलता है।

पूरे प्रकरण में राज्य जातिवादी तत्वों के समक्ष घुटने टेकता नज़र आया, मुआवज़ा देने तक में भेदभाव साफ़ साफ़ नज़र आया। इस सूबे में अजब सी रवायत क़ायम हो गई है कि ग़ैर दलित की हत्या हो तो उसे 50 लाख का मुआवज़ा और परिजन को नौकरी दी जाती है, पर दलितों की हत्या पर मुआवज़ा 5 लाख दिया जाता है, नौकरी का तो सवाल ही नहीं उठता है। राज्य को इतना संवेदनहीन नहीं होना चाहिये, उसकी नज़र में हर नागरिक बराबर होना चाहिये। इस सरकारी भेदभाव के खिलाफ़ देश ही नहीं बल्कि विदेशों तक में ज़बर्दस्त आक्रोश व्याप्त है, हालात यहाँ तक पहुँच गए हैं कि सत्तारूढ़ दल के विधायक पाना चंद मेघवाल ने तो अपनी विधायकी से इस्तीफ़ा तक दे दिया है, और भी लोग इस्तीफ़े देने की तैयारी में हैं।

अगर शासन ने समय रहते इस मामले को नहीं सम्भाला तो यह सत्ता प्रतिष्ठान के लिए जानलेवा होगा। जो लोग, समूह और जातियाँ इस निर्मम हत्याकांड को चतुराई से शब्दों की बाज़ीगरी करके उचित ठहराने का दुष्कर्म कर रहे हैं, वे भी इसका ख़ामियाज़ा भुगतेंगे, क्योंकि दलितों की यह जनरेशन सहन करने को तैयार नहीं है, वह ज़वाब देगी हर मोर्चे पर, कोई मुग़ालते में न रहे।

शिक्षा के कथित मंदिर में दलित छात्र के साथ जातिजन्य अत्याचार के खिलाफ़ देश व्यापी आक्रोश फूट पड़ा जो कि स्वाभाविक ही है, ऐसी क्रूरता और निर्दयता, वो भी शिक्षक द्वारा, कैसे बर्दाश्त की जा सकती है, भारतीय दंड संहिता की धारा 302 और अनुसूचित जाति जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम की विभिन्न धाराओं के तहत मुक़दमा दर्ज हो कर हत्या के आरोपी शिक्षक छैल सिंह को गिरफ़्तार किया जा चुका है।

छैल सिंह भौमिया राजपूत समुदाय से ताल्लुक़ रखता है, पहले कोई उसे राजपूत लिखते रहे तो किसी ने राजपुरोहित भी लिख दिया, बाद में भूल सुधार करके उसकी सही जाति का उल्लेख किया गया। छैल सिंह अपने एक जीनगर पार्टनर के साथ इस विद्यालय का संचालक था और हेड मास्टर भी। हालाँकि वह सुराणा गाँव का निवासी न हो कर चीतलवाना क्षेत्र के झाब नामक गाँव का निवासी है और यहीं रहकर अपने विद्यालय को संचालित करता है।

सुराणा गाँव के इस सरस्वती विद्या मंदिर में सभी जातियों के 350 स्टूडेंट अध्ययनरत हैं। यह गाँव भौमिया राजपूत समुदाय के बाहुल्य वाला है। विद्यालय में दलित विद्यार्थियों के साथ साथ दलित व आदिवासी शिक्षक भी नियुक्त हैं और एक पार्टनर तो जीनगर है जो दलित समुदाय का ही है।

मृत छात्र इंद्र कुमार मेघवाल के पिता देवा राम एक विडीयो द्वारा और चाचा ने पुलिस को दी तहरीर जो बाद में प्राथमिक सूचना रपट के रूप में दर्ज हुई, उसमें बताया कि प्यास लगने पर नौ वर्षीय इंद्र कुमार मेघवाल ने स्कूल के हेड मास्टर छैल सिंह के लिए पानी पीने हेतु रखे गए मटके से पानी पी लिया, इससे आग बबूला हेडमास्टर ने मासूम बच्चे के साथ मारपीट की, जिससे उसके दाहिने कान और आँख पर गम्भीर चोटें आई और उसकी नस फट गई, इलाज के लिए उसे बागोडा, भीनमाल, डीसा, मेहसाणा, उदयपुर और अहमदाबाद ले गये, जहां पर उपचार के दौरान बालक की मौत हो गई।

इस बीच मृतक छात्र इंद्र के पिता देवा राम मेघवाल और आरोपी अध्यापक छैल सिंह के मध्य फ़ोन पर बात हुई, जिसमें देवा राम शिक्षक से यह कह रहा है कि आपको इतना ज़ोर से नहीं मारना चाहिये, आपको बच्चों को इस तरह मारने का कोई अधिकार नहीं है। शिक्षक अपना क़सूर मानते हुए इलाज में मदद करने की बात कहता सुनाई पड़ रहा है। इसके बाद गाँव स्तर पर डेढ़ लाख रुपए में कोई समझौता होने का दावा किया जा रहा है।

इस क्रूर कांड की ख़बर मीडिया में आने और सोशल मीडिया पर घटना के बारे में पोस्ट्स वायरल होने के बाद पुलिस व प्रशासन हरकत में आया और उसने पीड़ित पक्ष की तहरीर पर प्राथमिकी दर्ज की और आरोपी शिक्षक को हिरासत में लिया, बाद में पोस्टमार्टम के बाद उक्त शिक्षक को गिरफ़्तार कर लिया गया।

शिक्षक के गिरफ़्तार होते ही शिक्षक की जाति के लोग संगठित और सक्रिय हुये और उन्होंने यह कहते हुए कि 'पानी की मटकी छूने और मारपीट करने की बात झूठ है' आरोपी का बचाव करते हुए बेहद सुनियोजित और व्यवस्थित काउंटर नेरेटिव सैट किया तथा पूरा जातिवादी ईकोसिस्टम सक्रिय हो गया।

सोशल मीडिया पर जातिवादी संगठन लिख रहे हैं कि उस विद्यालय में कोई मटकी थी ही नहीं, सब लोग पानी टंकी से पीते थे। पानी की बात,मटकी की बात, छुआछूत की बात और यहाँ तक कि मारपीट की बात भी सच नहीं है, लड़का पहले से ही बीमार था, बच्चे आपस में झगड़े होंगे, जिससे लग गई होगी। उसी स्कूल के एक अध्यापक गटाराम मेघवाल और कुछ विद्यार्थियों को मीडिया के समक्ष पेश किया गया कि पानी की मटकी की बात सही नहीं है, इस स्कूल में कोई भेदभाव नहीं है। न ही बच्चे के साथ मारपीट की गई। लगभग इन्हीं सुरों में जालोर भाजपा विधायक योगेश्वर गर्ग ने भी अपना सुर मिलाया और खुलेआम आरोपी शिक्षक को बचाने की कोशिश करते हुए विडीयो जारी किया है। पुलिस ने भी बिना इंवेस्टिगेशन पूरा किए ही मीडिया को बयान दे दिया कि मटकी का एंगल नहीं लग रहा है।

इस वक्त वहाँ की बहुसंख्यक वर्चस्वशाली जाति के लोग, उनके जातिवादी संगठन, मीडिया, विधायक, स्कूल के विद्यार्थी और कुछ शिक्षक यह साबित करने में लगे हुए हैं कि मृत छात्र के पानी का मटका छूने जैसी कोई बात ही नही हुई और न ही मारपीट. अब सवाल यह है कि अगर पानी की मटकी नहीं थी तो शिक्षक पानी कहाँ से पीते थे? जवाब यह दे रहे हैं कि विद्यार्थी हो अथवा शिक्षक, यहाँ तक कि गाँव वाले भी स्कूल में स्थित टंकी से पानी पीते थे।

स्कूल में स्थित पानी की जिस टंकी का फोटो टीवी चैनल्स दिखा रहे हैं, उसे देखकर तो उपरोक्त दावे में दम नहीं नज़र आता, क्योंकि टंकी पर साढ़े तीन सौ बच्चे और शिक्षक व अभिभावक तक पानी पी सकें, ऐसा लगता नहीं है। टंकी से नल जिस हाईट पर लगा हैं, वह छोटे बच्चों के लिए तो ठीक है, लेकिन अगर शिक्षक व ग्रामीणों को पानी उसी टंकी के उसी नल से पीना पड़े तो शायद वे नीचे ज़मीन पर घुटने टिका कर नल के मुँह लगा कर पीते होंगे, क्या यह हेड मास्टर व अन्य शिक्षकगण करते थे या अपने लिए अलग पानी पीने की मटकी रखते थे, यह तो उन्हीं का सच है, जिसे वे चाहे तो बोले अन्यथा झूठ भी बोलने को स्वतंत्र ही हैं।

अगर पानी की मटकी छूने का मामला नहीं था तो फिर वो क्या मामला था, जिसकी वजह से नौ वर्षीय मासूम को हेड मास्टर को इतना पीटना पड़ा कि उसकी जान ही चली गई, वो कारण सामने आना चाहिये, पुलिस को यह भी पता करना चाहिये कि इस निर्दयतापूर्ण पिटाई का क्या कारण था ?

यह भी दावा है कि हेड मास्टर ने पीटा ही नहीं, फिर वह क्यों फ़ोन पर गलती स्वीकार रहा है और उसे डेढ़ लाख में समझौता करने की क्या मजबूरी थी, बिना गलती डेढ़ रुपया भी क्यों देना चाहिये ? बेवजह तो कोई किसी का मुँह बंद करवाने को दबाव डाल कर समझौता नहीं करता और न ही पैसा देता है. समझौते की क्या मजबूरी थी? इतने बड़े कांड को तेइस दिन तक छिपा कर रख दिया गया, अगर दलित छात्र इंद्र कुमार की मृत्यु नहीं होती तो पूरा मामला मैनेज ही किया जा चुका था. क्या कभी भी यह स्कूली छात्र के साथ हुआ भेदभाव व अत्याचार सामने आ पाता? क्या बच्चों की कोई गरिमा नहीं है, क्या उनके कोई मानवीय अधिकार नहीं हैं? क्या उनको सजा देने का अधिकार शिक्षकों को है?

बहुत सारे प्रश्न अनुत्तरित हैं, जिनके जवाब जाँच और एफएसएल रिपोर्ट से मिलेंगे, लेकिन इससे पहले ही घोर जातिवादी तत्व और उनके संगठन यह साबित करने को आतुर हैं कि न मटकी का मामला है और न ही मारपीट का, यहाँ तक कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट के हवाले से दावे कर रहे हैं, जैसे कि डॉक्टर ने इन्हीं के कहने पर रिपोर्ट बनाई हो या बनाते ही इन्हीं कास्ट एलिमेंट्स को उनकी प्रतिलिपि पकड़ाई हो।

सोशल मीडिया पर जातिवादी तत्वों और उनके संगठनों की तरफ़ से हम जैसे लोगों को निरंतर चैलेंज दिया जा रहा है कि निष्पक्ष लिखो, पानी की बात मत कहो, मटकी का जिक्र मत करो, सुराणा में भेदभाव जैसी कोई बात ही नहीं है, हमारा भाईचारे का ताना बाना मत बिगाड़ो, एक न एक दिन तुमको सौहार्द खत्म करने वाली पोस्टें डिलीट करनी होगी, तब क्या तुम सार्वजनिक रूप से गलती मानोगे, माफ़ी माँगोगे? आदि इत्यादि...

मैं कहना चाहता हूँ कि पूरे देश में भयंकर जातिवाद है और जालोर में तो विशेष तौर पर बेहद घिनौना छुआछूत और भेदभाव तथा अन्याय, अत्याचार है, वहाँ पानी की मटकी और शिक्षा में भेदभाव के मामले संभव हैं, इसकी गहन जाँच हो और मिड डे मील, आँगन बाड़ी के पौषाहार व नरेगा में पानी पिलाने में नियुक्त लोगों का सामाजिक अंकेक्षण किया जाए, जिले के तमाम सरकारी व ग़ैर सरकारी विद्यालयों का एक जातिगत भेदभाव का सर्वे किया जाये तो सच्चाई सामने आ जायेगी कि कौन सा सौहार्द और क्या भाईचारा है वहाँ और दलित स्टूडेंट्स के क्या हालात हैं?

अंत में जातिवादी मानसिकता के लोगों से सिर्फ़ इतना सा सवाल है कि अगर न मृतक छात्र इंद्र के साथ पानी पीने की मटकी में भेदभाव हुआ और न ही हेडमास्टर ने उसे मारा तो क्या उस नौ वर्षीय मासूम ने अपने आप को मार डाला? कुछ तो मानवता रखो, थोड़ी तो इंसानियत बचा कर रखो और तनिक तो पीड़ित परिवार के प्रति संवेदना बरतो, क्या इंसान होने की इतनी न्यूनतम अर्हता भी नहीं बची है, अगर नहीं तो मुझे कुछ भी नहीं कहना है.

ध्रुवीकरण की राजनीति और सांझा विरासत पर हमले

राम पुनियानी

भारत की सांस्कृतिक एवं धार्मिक विरासत की समृद्धि उसकी विविधता में निहित है। अनेक कवियों और लेखकों ने बताया है कि किस प्रकार दुनिया के अलग-अलग हिस्सों से विभिन्न संस्कृतियों और नस्लों के लोगों के कारवां इस भूमि पर पहुंचे और उन्होंने मिलजुलकर भारत रूपी बहुरंगी फूलों के गुलदस्ते का निर्माण किया। लोगों के एक साथ जुड़ने की इस प्रक्रिया का चरम बिंदु था स्वाधीनता संग्राम जब विविध धर्मों, जातियों और अलग-अलग भाषाएं बोलने वालों ने कंधे से कंधा मिलाकर भारत को विदेशी शासन से मुक्ति दिलाने के लिए संघर्ष किया। जिस दौरान देश में परस्पर प्रेम और सद्भाव बढ़ रहा था उसी समय कुछ ऐसी शक्तियां भी उभरीं जिनकी सोच संकीर्ण और साम्प्रदायिक थी और जिन्होंने इस प्रक्रिया को बाधित करने का प्रयास किया। इस प्रयास का परिणाम था देश का बंटवारा।

स्वतंत्रता के तुरंत बाद के सालों और दशकों में सामंजस्य और सद्भाव को बढ़ावा देने वाली शक्तियां प्रभावी थीं जबकि विघटनकारी सोच रखने वाले कमजोर और हाशिए पर थे। पिछले चार दशकों में संकीर्ण साम्प्रदायिक ताकतों ने बहुत तेजी से अपना सिर उठाया है। वे भारत की विविधता को, भारत के हम सब का देश होने को, स्वीकार ही नहीं करना चाहते। इस प्रवृत्ति के कुछ उदाहरण पिछले दिनों सामने आए हैं।

देवबंद के एक छोटे से मामूली मदरसे के मौलाना ने मुस्लिम गायिका फरमानी नाज के खिलाफ फतवा जारी किया। फरमानी नाज का भजन 'हर हर शंभू' जबरदस्त हिट हुआ है। ये मौलाना साहब टीवी चैनलों की पहली पसंद हैं। अपने प्राईम टाईम में ये चैनल मुर्गों की लड़ाई करवाते हैं, जिन्हें वे बहस कहते हैं। इनके लिए उन्हें दोनों धर्मों के अतिवादी लोगों की जरूरत होती है ताकि वे एक-दूसरे से जमकर लड़े और चैनलों की टीआरपी बढ़। इन मौलाना साहब का दारूल उलूम देवबंद, जो कि देश का प्रमुख मदरसा है से कोई लेना-देना नहीं है। दारूल उलूम फतवा तभी जारी करता है जब कोई उससे किसी मुद्दे पर उसकी राय देने को कहता है। फतवा दरअसल आदेश नहीं बल्कि एक तरह की राय ही होता है।

असद काजमी नाम के ये रूढ़िवादी मौलाना शायद हिन्दू भजन गायकी की लंबी परंपरा से वाकिफ नहीं हैं जो मोहम्मद रफी से लेकर फराज खान तक जाती है. इनमें से कुछ भजनों के संगीत निदेशक ए. आर. रहमान और नौशाद जैसी असाधारण प्रतिभाएं रही हैं। मुसलमानों द्वारा गाए भजनों की सूची किसी रजिस्टर के कई पन्ने भर देगी परंतु मैं सिर्फ दो उदाहरण देना चाहूंगा। मेरा सबसे पसंदीदा भजन है 'मन तड़पत हरि दर्शन को आज। इसके बोल शकील बदायूंनी के थे, संगीत नौशाद का और इसे गाया था मोहम्मद रफी ने। बड़े गुलाम अली खां साहब द्वारा गाए भजन 'हरि ओम् तत्सत' को भला कौन भूल सकता है। और ना ही यह एकतरफा है। कई हिन्दू गायकों ने कव्वाली गायन को नई ऊंचाईयां दी हैं। इनमें शामिल हैं प्रभा भारती और ध्रुव सांगरी।

कुछ साल पहले इसी तरह के मौलानाओं ने बंगाली फिल्म कलाकार और सांसद नुसरत जहां को दुर्गा पूजा में भाग लेने के लिए जमकर खरी-खोटी सुनाई थी जबकि दुर्गा पूजा बंगाल की संस्कृति का अंग है। सीमा के उस पार पाकिस्तान में एक पुलिस वाले को एक मुस्लिम कालेज शिक्षक के बिंदी लगाने पर ऐतराज था। उसका कहना था कि बिंदी हिन्दू धर्म से जुड़ी हुई है। यह अच्छा हुआ कि वहां की सरकार ने उस पुलिस वाले को मुअत्तिल कर दिया।

सुनियोजित ढंग से यह अफवाहें उड़ाई जाती हैं कि मस्जिदों में हथियार जमा किए जाते हैं जिनका इस्तेमाल साम्प्रदायिक दंगों में होता है। यह भी कहा जाता है कि मस्जिदों में हिन्दुओं का प्रवेश वर्जित है। यह बिल्कुल सही नहीं है। उल्टे कई हिन्दू मंदिरों में अन्य धर्मों के लोगों के प्रवेश पर पाबंदी है। जहां तक मस्जिदों का सवाल है, उनमें कोई भी जा सकता है। कुछ स्कूलों ने जब अपने विद्यार्थियों को विभिन्न धर्मों के आराधना स्थलों की यात्रा कराने का निर्णय लिया तब बजरंग दल ने इसका विरोध किया। बड़ौदा के देहली पब्लिक स्कूल ने बच्चों को हमारे देश की धार्मिक विविधिता से रूबरू करवाने के लिए उन्हें एक मस्जिद में ले जाने की घोषणा की। बजरंग दल ने इसका विरोध किया और स्कूल को चेतावनी दी कि अगर बच्चों को मस्जिद ले जाया गया तो उसके गंभीर परिणाम होंगे। नतीजे में यह कार्यक्रम रद्द कर दिया गया। इसके एक सप्ताह पहले विद्यार्थियों को एक मंदिर में ले जाया गया था। इसी तरह की घटनाएं दिल्ली और कर्नाटक में भी हुईं।

हमारी सांझा संस्कृति पर ये हमले और तेज, और कटु होते जा रहे हैं। ध्रुवीकरण की राजनीति को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसका एक उदाहरण हाल में सामने आया जब भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने बढ़ती महंगाई, आवश्यक वस्तुओं पर जीएसटी लगाए जाने और आम नागरिकों को पेश आ रही अन्य दिक्कतों के संदर्भ में संसद से राष्ट्रपति भवन तक मार्च किया। प्रदर्शनकारी काले रंग के कपडे पहने हुए थे।

अपने चरित्र के अनुरूप भाजपा ने इस प्रदर्शन का इस्तेमाल भी साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण के अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने के लिए किया। पार्टी के शीर्ष नेता और केन्द्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि कांग्रेस, राम मंदिर का विरोध कर रही है! इसका कारण उन्होंने यह बताया कि कांग्रेस ने काले कपड़ों में प्रदर्शन करने के लिए वह दिन (5 अगस्त) चुना जिस दिन दो साल पहले प्रधानमंत्री ने राम मंदिर के निर्माण कार्य का उद्घाटन किया था। शाह का कहना था कि यह प्रदर्शन कांग्रेस की तुष्टिकरण की राजनीति का हिस्सा है। इससे एक कदम आगे बढ़कर उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने यह मांग की कि कांग्रेस को राम भक्तों का अपमान करने के लिए देश से माफी मांगनी चाहिए।

कांग्रेस ने शाह-योगी पर जवाबी हमला बोलते हुए कहा कि वे दरअसल एक प्रजातांत्रिक विरोध प्रदर्शन, जो महंगाई जैसे ज्वलंत मुद्दे को लेकर किया गया था, से लोगों का ध्यान हटाने का कुत्सित प्रयास कर रहे हैं और समाज को साम्प्रदायिक आधार पर ध्रुवीकृत करना चाहते हैं। जनता की बढ़ती तकलीफों की ओर देश और सरकार का ध्यान आकर्षित करना आवश्यक है। इस विरोध प्रदर्शन को राम मंदिर और तुष्टिकरण से जोड़कर भाजपा ने वही किया जो वह बरसों से करती आई है-अर्थात हर चीज को धर्म से जोड़ो, हर मुद्दे को भावनात्मक बना दो और अलग-अलग धर्मों के लोगों में ज्यादा से ज्यादा गलतफहमियां पैदा करो। क्या अन्य पार्टियां और सामाजिक समूह हर मुद्दे को साम्प्रदायिक रंग देने के भाजपा के प्रयास का मुकाबला कर सकेंगे? क्या प्रजातांत्रिक और धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति और समूह लोगों का ध्यान मूलभूत मुद्दों से भटकाने की कुटिल कवायद से निपटने का रास्ता ढूंढ पाएंगे?

भाजपा अपने समर्थक संगठनों के विशाल नेटवर्क और सरकार के आगे नतमस्तक मीडिया के जरिए उस एजेंडे को प्रोत्साहन दे रही है जिसमें लोगों की समस्याओं के लिए कोई जगह नहीं है। लक्ष्य केवल यह है कि आमजनों को धार्मिक और भावनात्मक मुद्दों में उलझाए रखा जाए।

भारत की सांझा संस्कृति पर चौतरफा हमले हो रहे हैं। आम लोगों की जिंदगी दूभर होती जा रही है परंतु उनकी समस्याओं से ध्यान हटाने का हर संभव प्रयास किया जा रहा है। प्रजातंत्र में लोगों की समस्याएं सर्वोपरि होनी चाहिए। हमें एक सच्चे प्रजातंत्र के निर्माण के लिए सतत प्रयासरत रहना चाहिए। **(अंग्रेजी से रूपांतरण अमरीश हरदेनिया)**